पूर्वोत्तर मानसून

प्रलिम्सि के लिये

उत्तर-पूर्वी मानसूनी वर्षा, मैडेन-जूलियन ऑसलिशन, अंत: उष्णकटबिंधीय अभसिरण क्षेत्र, ला नीना, अलनीनो

मेन्स के लिये

प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में उत्तर-पूर्वी मानसूनी वर्षा में गरिावट के कारण और प्रभाव

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के दक्षणिी प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में उत्तर-पूर्वी मानसूनी वर्षा में गरिावट देखी गई।

मुख्य बदिु:

- **भारत में वर्षा का पैटर्न:** भारत एक वर्ष में **दो मौसमी वर्षा** प्राप्त करता है।
    - देश की वार्षकि वर्षा का लगभग 75 प्रतशित **दक्षणि-पश्चमि मानसून** (जून-सतिंबर) से प्राप्त होता है।
    - दूसरी ओर, **पूर्वोत्तर मानसून** (अक्तूबर-दसिंबर) तुलनात्मक रूप से छोटे पैमाने का मानसून होता है जो दक्षणिी प्रायद्वीप तक ही सीमति है।
- उत्तर-पूर्व मानसून **से जुड़े क्षेत्र:**
    - इसे **शीतकालीन मानसून** भी कहा जाता है, पूर्वोत्तर मानसून से जुड़ी बारशि**तमलिनाडु, पुडुचेरी, कराइकल, यनम, तटीय आंध्र प्रदेश, केरल, उत्तर आंतरकि कर्नाटक, माहे और लक्षद्वीप** के लिये महत्वपूर्ण है।
    - कुछ दक्षणि एशयिाई देश जैसे **मालदीव, श्रीलंका और म्यांमार** में भी अक्तूबर से दसिंबर के दौरान रकॉिर्ड वर्षा दर्ज करते हैं।
    - तमलिनाडु इस दौरान अपनी वार्षकि वर्षा का लगभग 48 प्रतशित (447.4 mm) प्राप्त करता है, यह वर्षा राज्य में कृषिगतविधियिों और जलाशय प्रबंधन के लिये महत्वपूर्ण कारक है।
- देश से दक्षणि-पश्चमि मानसून के पूरी तरह से लौट जाने के बाद मध्यअक्तूबर तक हवा का पैटर्न तेज़ी से दक्षणि-पश्चमि से उत्तरी-पूर्वी दशिा में बदल जाता है।
    - दक्षणि-पश्चमि मानसून के मौसम के बाद की अवधि(अक्तूबर-दसिंबर) उत्तरी हदि महासागरीय क्षेत्र (अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी) में चक्रवाती गतविधिके लिये चरम समय है।
    - कम दबाव प्रणाली या चक्रवात के गठन से जुड़ी हवाएँ इस मानसून को प्रभावति करती हैं।
    - इसलयि चक्रवातों की समय पर जानकारी आकस्मकि योजना बनाने हेतु सरकार तथा आपदा प्रबंधन टीम के लिये महत्वपूर्ण हो जाता है।

इस पूर्वोत्तर मानसून में कमी के कारण:

प्रशांत महासागर में ला नीना की स्थतियिाँ:

- **ला नीना (La Niña) की स्थतिदिक्षणि पश्चमि मानसून से जुड़ी वर्षा को बढ़ाती है लेकनि पूर्वोत्तर मानसून से जुड़ी वर्षा पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।**
- ला नीना मध्य और पूर्वी भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह के तापमान के बड़े पैमाने पर शीतलन को संदर्भति करता है जो **उष्णकटबिंधीय वायुमंडलीय परसिंचरण**, जैसे-हवाओं, दबाव और वर्षा में परविर्तन के साथ जुड़ा हुआ है।
- इसका आमतौर पर मौसम और जलवायु पर वपिरीत प्रभाव पड़ता है जैसे कि एल नीनो जो तथाकथति **अल नीनो दक्षणिी दोलन (El Niño Southern Oscillation)** का गर्म चरण है।

- प्रशांत महासागर में **पेरू** के निकिट समुद्री तट के गर्म होने की घटना को अल-नीनो कहा जाता है।
- अल-नीनो एवं ला-नीना पृथ्वी की सर्वाधिक शक्तिशाली घटनाएँ हैं जो पूरे ग्रह के आधे से अधिक भाग के मौसम को परिवर्तित करती हैं।
- अल–नीनो एक वैश्विक प्रभाव वाली घटना है और इसका प्रभाव क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। स्थानीय तौर पर प्रशांत क्षेत्र में मत्स्य उत्पादन से लेकर दुनिया भर के अधिकांश मध्य अक्षांशीय हिस्सों में बाढ़, सूखा, वनाग्नि, तूफान या वर्षा आदि के रूप में इसका असर सामने आता है।

अंत: उष्णकटिबंधीय अभिसिरण क्षेत्र (Inter Tropical Convective Zone):

- ITCZ पृथ्वी पर भूमध्य रेखा के पास वृत्ताकार क्षेत्र है। यह पृथ्वी पर वह क्षेत्र है, जहाँ उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्धों की व्यापारिक हवाएँ, यानी पूर्वोत्तर व्यापारिक हवाएँ तथा दक्षिण-पूर्व व्यापारिक हवाएँ एक जगह मिलती हैं।
- भूमध्य रेखा पर सूर्य का तीव्र तापमान और गर्म जल ITCZ में हवा को गर्म करते हुए इसकी आर्द्रता को बढ़ा देते हैं जिससे यह उत्प्लावक बन जाता है।
- व्यापारिक हवाओं के अभिसिरण (Convergence) के कारण यह ऊपर की तरफ उठने लगता है। ऊपर की तरफ उठने वाली यह हवा फैलती है और ठंडी हो जाती है, जिससे भयावह आँधी तथा भारी वर्षा शुरू हो जाती है।

अन्य महत्वपूर्ण वायुमंडलीय परिसंचरण:

- मैडेन-जूलियन ऑसलिशन **(Madden-Julian Oscillation): मैडेन-जूलयिन ऑसीलेशन को भूमध्य रेखा के पास पूर्व की ओर सक्रिय बादलों और वर्षा के प्रमुख घटक या निर्धारक (जैसे मानव शरीर में नाड़ी (Pulse) एक प्रमुख निर्धारक होती है) के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो आमतौर पर हर 30 से 60 दिनों में स्वयं की पुनरावृत्ति करती है।**

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/subdued-northeast-monsoon